अकबरी लोटा

पाठ का सार और प्रतिपाद्य –

प्रस्तुत पाठ अन्नपूर्णानंद वर्मा द्वारा रचित हास्य कहानी है। कहानी लाला झाउलाल और उनके मित्र पंडित बिलवासी मिश्र पर आधारित है। लाला जी कि पत्नी उनसे कुछ रुपए मांगती है और लालाजी उन्हें रुपए देने में असमर्थ होते हैं परंतु पत्नी के समक्ष अपनी विवशता नहीं बता सकते थे। इसलिए एक सप्ताह के अंदर रुपए देने का वादा करके अपने मित्र पंडित बिलवासी मिश्र से मदद मांगने चले जाते हैं। परंतु दुर्भाग्यवश पंडित जी भी अपने मित्र की सहायता नहीं कर पाते हैं। परंतु अपनी सूझ-बूझ से पंडित जी ने एक अंग्रेज़ को मूर्ख बनाकर लालाजी का पुराना लोटा अकबर के लोटे के नाम से बेच दिया और जितने रुपए की आवश्यकता होती है उससे दोगुनी रकम लालाजी को दिलवाकर आगे चले जाते हैं। लालाजी अभी ठीक से धन्यवाद भी नहीं कर पाते हैं तब तक पंडित जी मित्र को मुश्किल से निकालने की संतुष्टि के साथ चले जाते हैं। अंततः लालाजी अपनी पत्नी को रुपए देने के कार्य में सफल होते हैं और चैन की नींद सोते हैं।

लाला झाउलाल की चारित्रिक विशेषताएँ –

- (1) **स्वभिमानी** – लालाजी एक स्वभिमानी मनुष्य हैं। जब उनकी पत्नी अपने भाई से रुपए मांगने की बात करती है तो लालाजी के स्वभिमान पर चोट लगती है और वे अपनी पत्नी को रुपए देने के लिए तैयार हो जाते हैं।
- (2) **आदर्श पति** – लाला झाउलाल एक आदर्श पति हैं। अपनी पत्नी के रुपए मांगने पर रुपए न होने पर भी उसे निराश नहीं करते।
- (3) **वचन बद्ध** – रुपए नहीं होने पर भी लालाजी अपनी पत्नी से रुपए देने का वादा करते हैं और उस वादे को पूरा करने के बाद ही चैन की सांस लेते हैं।
- (4) **सहनशील** – जब लाला झाउलाल अपनी पत्नी से पानी मांगते हैं तो उनकी पत्नी उन्हें लोटे में पानी देती है। उनके लिए गिलास नहीं लाती है। यह बात लालाजी के लिए सामान्य नहीं थी। परंतु फिर भी लालाजी बिना कुछ बोले लोटे से ही पानी पी लेते हैं।

पंडित बिलवासी मिश्र की चारित्रिक विशेषताएँ –

- (1) **आदर्श मित्र** – पंडित बिलवासी मिश्र एक आदर्श मित्र हैं। अपने मित्र की ज़रूरत को पूरा करने के लिए उन्होंने बहुत ही गोपनीय तरीके से जल्दी ही रुपयों का इंतजाम कर दिया।
- (2) **बुद्धिमान** – बड़ी ही चतुराई से पंडित जी ने अपनी सूझ-बूझ के साथ अंग्रेज को एक सामान्य लोटा इतने महंगे दामों पर बेच दिया। यह उनकी समझदारी का ही प्रमाण है।

(3) इमानदार – अंग्रेज़ को लोटा बेचने के बाद जो रुपए उन्हें मिले वो सारे रुपए उन्होंने इमानदारी से लाला झाउलाल को दे दिए।

(4) कुशल वक्ता – पंडित बिलवासी मिश्र बातों के धनी थे। तभी तो अपनी वाक चतुराई से अंग्रेज़ को यह मानने पर मजबूर कर दिया कि एक साधारण सा लोटा साधारण न होकर अकबर का पसंदीदा लोटा है।

पाठ का उद्देश्य –

- (1) बहुत ही सहजता के साथ नीतिपूर्ण मुल्यों को हमारे समक्ष रखना।
- (2) एक सच्चे मित्र का चित्रण कर उसका आदर्श रूप प्रस्तुत करना।
- (3) हास्य प्रसंगों के माध्यम से लोगों का मनोरंजन करना।

पाठ का संदेश –

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने निस्वार्थ मित्रता का संदेश दिया है। जिस प्रकार पंडित जी ने अपने मित्र की सहायता की बिना किसी धन्यवाद की अपेक्षा किए वह सराहनीय है।